# इकाई 5 विनिमय एवं मुद्रा*

संरचना


5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 मुद्रा और विनिमय का अर्थ

5.2.1 मुद्रा

5.2.2 विनिमय

5.3 विनिमय का इतिहास

5.4 विनिमय के बदलते आयाम

5.4.1 आखेट और खाद्य पदार्थों के संकलन करने वाले समाजों में विनिमय का माध्यम

5.4.2 चरवाहा समाजों में विनिमय का माध्यम

5.4.3 कृषि–आधारित समाजों में विनिमय का माध्यम

5.5 आर्थिक विनिमय के आधुनिक रूप

5.6 मुद्रा की भूमिकाएं

5.6.1 विनिमय के माध्यम

5.6.2 मूल्यों का संचित करना

5.6.3 खाते की इकाई के रूप में

5.7 मुद्रा एवं वैधता

5.8 सारांश

5.9 संदर्भ

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 5.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :

- मुद्रा एवं विनिमय की धारणा की व्याख्या;
- अतीत की विनिमय पद्धतियों का वर्णन;
- मुद्रा के आधारभूत कार्यों का वर्णन;
- विभिन्न प्रकार की मुद्राओं की तुलना; और
- मुद्रा संबंधी वैधानिक समस्याओं का वर्णन।

## 5.1 प्रस्तावना

चौथी इकाई में 'पारस्परिकता और उपहार' में आपने पारस्परिकता तथा उपहार तथा उसके सामाजिक महत्व की प्रकृति एवं प्रक्रिया के बारे में पढ़ा। इस इकाई 'विनिमय एवं मुद्रा' में हम सामाजिक महत्व के दूसरे पहलू की व्याख्या करेंगे।

* डॉ. ऐजाज अहमद गिलानी द्वारा लिखित।

यह जान लेना महत्वपूर्ण होगा कि विनिमय अथवा मुद्रा का वर्णन एक दूसरे की गैरमौजूदगी में नहीं किया जा सकता। संपूर्ण सामाजिक विज्ञान विषय के विद्वानों ने सदैव एक का वर्णन दूसरे के सापेक्ष किया है। क्योंकि मुद्रा का इस्तेमाल सदैव विनिमय के माध्यम के रूप में किया जाता है, अतः इस इकाई में 'मुद्रा की भूमिकाओं पर विचार किया जायेगा। विनिमय तथा मुद्रा शब्द दोनों शब्दों का इस इकाई में भी साथ–साथ वर्णन किया जायेगा। विनिमय तथा मुद्रा की धारणाओं को समझने के लिए इस इकाई में दोनों की अलग–अलग व्याख्या की जायेगी। फिर विनिमय के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जाकर अतीत में समाजों में उसके विभिन्न प्रकारों व माध्यमों पर प्रकाश डाला जायेगा। प्राचीन काल में वस्तु विनिमय से आरंभ करके वर्तमान समय की ई–मुद्रा, चैक तथा बिल आधारित विनिमय पद्धति तक पूरी यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा। जैसाकि ऊपर बताया जा चुका है मुद्रा विनिमय का एक माध्यम है, परन्तु माध्यम के अलावा मुद्रा की अन्य भूमिकाओं को भी इस इकाई में उजागर किया जायेगा। कीमत का उत्पादित वस्तुओं से क्या संबंध है, कीमत के रूप में प्राप्त धन किस प्रकार उत्पादन के संसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, इसके अलावा भी अन्य भिन्न–भिन्न रूपों में मुद्रा का इस्तेमाल किया जाता है, इस इकाई में इसके बारे में बताया जायेगा। इससे मुद्रा की वैधता भी प्रकाश में आयेगी। इस इकाई में मुद्रा के सामाजिक पक्ष का भी वर्णन किया जायेगा, (अतीत से वर्तमान तक) जो मानव–समूहों व समुदायों को आपस में जोड़े रखता है तथा उन्हें विनिमय आधरित संबंधों को बनायें रखने के लिए अभिप्रेरित करता है।

## 5.2 मुद्रा तथा विनिमय का अर्थ

जब हम विनिमय के विभिन्न रूपों की चर्चा एवं वर्णन करते हैं, हमारे दिमाग दो धारणाएं एक साथ आती हैं – ये हैं – मुद्रा तथा विनिमय

### 5.2.1 मुद्रा

विनिमय के एक माध्यम के रूप में मुद्रा वह वस्तु है जिसे लोग उत्पादों या सेवाओं को प्राप्त करने के बदले देते हैं। परन्तु इसका दूसरा पहलू यह भी है कि उत्पादों या सेवाओं के बदले मुद्रा प्राप्त की जाती है। जैलिजर (1994) के अनुसार मुद्रा एक मात्र 'अंतपरिवर्तनीय' तथा पूर्णतः गैर 'व्यक्तिगत साधन' है। खासकर अर्थशास्त्रियों के लिए मुद्रा अपने अर्थ में विशिष्ट है, यद्यपि दिन–प्रतिदिन के विनिमय में मुद्रा विभिन्न अर्थों में मौजूद रहती है। मुद्रा के पारंपरिक इस्तेमाल से अलग हटकर अर्थशास्त्री उसका इस्तेमाल करते हैं। अर्थशास्त्रियों के लिए मुद्रा एक माध्यम है जिसके द्वारा विनिमय घटित होता है और मुद्रा को मूर्त या अमूर्त उत्पादों के बदले या अदा नहीं की गई धनराशि के बदले स्वीकार किया जाता है। मुद्रायें जैसे रूपया या डॉलर आदि धन के उपयुक्त उदाहरण हैं। जब हम धन की बात करते हैं या नकदी की बात करते हैं तो हमारे आशय मुद्रा से होता है जो कागज से बनी मुद्राओं या सिक्कों के बदले ही उपयोग में आने वाली समस्त वस्तुओं, उत्पादों तथा सेवाओं को प्राप्त करते हैं। अतः मुद्राओं या धन के बिना दुनियां में रहना एक बड़ी चुनौती होनी। यद्यपि इस अर्थ में भारी विरोध है कि धन के बिना दुनियां की उस समय कल्पना करना कठिन लगता है जब कि आदि कालीन समाजों में विनिमय का आधार मुद्रायें नहीं थीं। पहले इस बात पर विचार करते हैं कि आदिकालीन समाजों में विनिमय किस प्रकार होता था और बिना मुद्राओं वाले विनिमय से चलकर मुद्राओं के आधार पर विनिमय के युग तक हम

किस प्रकार पहुंचे। इस बात की गहराई में जाने से पहले कि अतीत में विनिमय का स्वरूप क्या था, हमें विनिमय का अवधारणा तथा उसका अर्थ व्यापक रूप से समझ लेना चाहिए।

### 5.2.2 विनिमय

विनिमय चीजों के लेने और देने की एक विधि है जिसमें परस्पर निर्भरता का भाव अंतर्निहित है। इसकी दो अलग विशेषताएं रेखांकित की जा सकती है – एक सहयोगी, दूसरी प्रतियोगिता परक। विनिमय की सहयोगी विशेषता की जडें लाभों की साझेदारी से अवस्थित हैं। सहयोगात्मक विशेषता वाले विनिमय दोनों पक्षों को लाभ होता है। प्रतियोगिता परक या प्रतिस्पर्धात्मक विनिमय में टकराव का भाव अंतर्निहित है। (ब्लाउॅ, 1964) विनिमय के दोनों प्रकारों की तुलनात्मक व्याख्या बदलती रहती है – निर्भर करता है कि विनिमय की प्रकृति वस्तुपरक है या व्यक्ति परक। विनिमय के दो महत्वपूर्ण रूप हैं – पारस्परिक सहमति से किया जाने वाला विनिमय या सौदेवाजी के आधार पर किया जाने वाला विनिमय इन दोनों रूपों को ही सहयोगी या प्रतिस्पर्धापरक विनिमय के रूप में जाना जाता है। सौदेबाजी के आधार पर किया गया विनिमय दोनों पक्षों को अपने प्रति प्रतिबद्ध बना देता है। किसी उत्पाद का मूल्य तय करने के बाद विनिमय के लिए बाध्य हो जाना भी एक प्रकार की सहमति दर्शाता है। दूसरे प्रकार के विनिमय में रुचियों का टकराव मौजूद रहता है। पारस्परिक विनिमय में यद्यपि दोनों पक्षों को लाभ होता है परन्तु कोई सौदेबाजी नहीं होती। टकराव की प्रवृत्ति प्रतिस्पर्धा के अंदर छिपी होती है, विनिमय में प्रतिस्पर्धा आते ही वह उजागर हो जाती है। जबकि बातचीत के द्वारा निष्कर्ष पर पहुंचने के बाद जो विनिमय होता हैं, उसमें दोनों पक्षों को विनिमय की शर्तें स्वीकार्य होती हैं, और दोनों पक्ष इन शर्तों से बंध जाते हैं। परन्तु पारस्परिक विनिमय में बिना प्रत्याशा के दोनों पक्ष आदान–प्रदान करते हैं और लाभान्वित होते है।

## 5.3 विनिमय का इतिहास

लोग युगों से समुदायों में रहते आये हैं। वे आदान–प्रदान की जाने वाली वस्तुओं के अंतर्निहित मूल्यों के आधार पर लोन करके काम चलाया करते थे। आगे चलकर सोने या चांदी जैसे धातुओं की बनी मुद्रायें चलन में आने लगीं। समय–समय पर इस मामले में बदलाव किये जाते रहे कि मुदायें किस प्रकार और किस चीज से तैयार की जाएं। परिणामतः अनेक वस्तुओं का इस्तेमाल मुद्रायें बनाने में इस्तेमाल किया जाने लगा। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि धन का महत्व लोगों की सोच में सदा मौजूद या जो विभिन्न समाजों की आवश्यकताओं व स्थितियों के अनुसार अभिव्यक्ति पाता रहा। मुद्रा की अवधारणा दो रूपों में दिखाई देती है। वस्तुओं से वस्तुओं की अदला बदली तथा मुद्रा के बदले वस्तु की प्राप्ति। पहला प्रकार चलन में मौजूद मुद्रा को वस्तु – धन कहा जा सकता है, दूसरे प्रकार चलन में कागज से बनी मुद्रा को धन के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। (मिस्किन व सर्लेटीज, 2011) धन के उद्भव में आने की विभिन्न अवस्थाएं समय व स्थान के संदर्भ में विकसित होने वाली विभिन्न मानव सभ्यताओं में देखी जा सकती हैं। आरम्भिक अवस्था में धन का उद्भव उन वस्तुओं के रूप में हुआ था जो अदला–बदली के लिए इस्तेमाल की जाती थीं। फिर वस्तुएं धातु से बने सिक्कों के बदले प्राप्त करने की प्रथा चलन में आ गई, फिर कागज से बनी मुद्रा (बैंक – नोट) तथा साख मुद्रा (चैक) के रूप में चलन में आई।

होते–होते वह दौर भी आ गया जब प्लास्टिक से बने क्रेडिट कार्ड व डेबिट कार्ड चलन में आ गये। ऑनलाइन लेन–देन के लिए ई–मुद्रा भी चल निकली। (चिन्नामई, 2013) नीचे वस्तु से लेकर बैंक नोट तक और ई–मुद्रा तक की लेन–देन कर मात्रा के विविध रूपों का वर्णन किया गया है।

## 5.4 विनिमय के बदलते आयाम

अतीत काल में विनिमय के माध्यम के रूप में वस्तुओं (मूर्त व अमूर्त) का इस्तेमाल करती थीं जिन्हें सभी सामाजिक परिवेशों में स्वीकृति प्राप्त थी। हर व्यक्ति अपनी पसंद की वस्तु या सेवा प्राप्त करने के बदले वस्तुएँ प्रदान करता था और इसी तरह दूसरों के उद्देश्य पूर्ति के लिए बदले में वस्तुएँ स्वीकार भी करता था। इसका अर्थ यह है कि वस्तुओं के अंतर्निहित मूल्य ही विनिमय के आधार थे। किसी भी भौतिक पदार्थ को वस्तु के मूल्य के रूप में स्वीकार किये जाने की शर्तें सबको मंजूर थीं। वस्तु–धन का यह रूप आखेट करने और खाद्य पदार्थों को इकटठा करने वाली सभ्यता के युग में, चरवाहा युग में तथा कृषि–आधारित समाजों के दौर में मौजूद था। यद्यपि हर अगले दौर के समाजों में वस्तुओं को धन के रूप में इस्तेमाल के तरीके बदलते गये थे।

### 5.4.1 आखेट और खाद्य पदार्थों के संकलन करने वाले समाजों में 'विनिमय का माध्यम'

अविकसित समाजों में सबसे पहले आखेट एवं खाद्य–पदार्थ संग्रह करने वाले समाज का नाम आता है। इन समाजों के लोग शिकार करके अपना पेट भरा करते थे। इन समाजों में शिकार करके लोग संपत्ति अर्जित करते थे। शिकार करके जो कुछ लोग प्राप्त करते थे उसकी कीमत स्वीकार की जाती या, जैसे शिकार में मारे गये जानवर की खाल शरीर ढकने के लिए वस्त्र के रूप में इस्तेमाल की जाती थी। उसके बदले वस्त्र प्राप्त किये जा सकते थे। इस प्रकार यह पहले वस्तु–धन के रूप में सामने आया। इस प्रकार का वस्तु–धन का चलन दुनियां के कुछ मांगों में आज भी मौजूद है, वहाँ अब भी वस्तुओं के बदले वस्तुओं का लेन–देन होता है। शिकार से प्राप्त चीजों को वस्तु धन के रूप में इस्तेमाल करने के साथ–साथ ऐसे बीजों तथा जड़ों के बदले खाद्य सामग्री प्राप्त करने का चलन अस्तित्व में आये जिनके इस्तेमाल औषधि के रूप में किया जाता था।

### 5.4.2 चरवाहा समाजों में विनिमय के माध्यम

शिकारी तथा भोजन संग्रह करने वाले समाज की तरह ही चरवाहा समाजों में भी वस्तु–धन के चलन के प्रमाण मिलते हैं, परन्तु यह वस्तु धन थोड़ा अलग प्रकार का था। सभ्यता का विकास होते–होते पशुओं को धन के रूप में स्वीकार करने का प्रथा आरंभ हो गई। पशुओं का पालन करने ओर उसकी अदला–बदली या उनके बदले आवश्यकता की अन्य वस्तु प्राप्त करने की प्रथा समय बीतने के साथ–साथ पशुधन को सम्पत्ति के रूप में बढ़ाने तथा पशुओं को मूल्य के बदले बेचने का प्रथा चलन में आ गई, जो अब भी जारी है। इस विकास के साथ ही पशुओं को मारकर उसके खाल बेचने के स्थान पर सीधे–सीधे पशुओं को ही बेचा जाने लगा।

### 5.4.3 कृषि आधारित समाजों में विनिमय के माध्यम

कृषि आधारित समाजों में वस्तु धन खेतों में पैदा होने वाली फसलों के रूप में अस्तित्व में आया। इन फसलों में सब्जियां, फल, मक्का, चावल, गेहूं आदि अनेक प्रकार के अनाज, दलहन तथा तिलहन आदि का उत्पादन शामिल था। इसके साथ–साथ अनेक प्रकार के पशुओं व पक्षियों से मिलने वाले उत्पाद जैसे दूध, अंडा आदि वस्तु–धन के रूप में सामने आये। ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि कृषि आधारित समाज मुद्राओं का इस्तेमाल नहीं करते थे। वस्तु–धन का इस्तेमाल ज्यादातर वस्तु विनिमय के रूप में ही किया जाता था। ऐसी चीजों तथा सेवाओं के लिए मुद्रा का इस्तेमाल किया जाता था जो कृषि आधारित समाज खेतों में उत्पन्न नहीं कर सकता था। इस तरह के वस्तु–धन का चलन अब भी गांवों में मौजूद है परन्तु पहले की तुलना में उसमें काफी अंतर आ गया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वस्तु धन अब भी विभिन्न समाजों में मौजूद है। उसका स्वरूप विकसित हो गया है। चीजों के आयात और निर्यात के माध्यम से वस्तु धन का इस्तेमाल अब भी होता है। वस्तुएँ के बदले वस्तुएँ अथवा धन के बदले वस्तुओं की खरीदारी का चलन आधुनिक समाजों में भी मौजूद है। इस प्रकार इस समय दुहरी मुद्रा का चलन में है। वस्तु–धन की प्रकृति में बदलाव आया है, अब रोजमर्रा के इस्तेमाल में आने वाली चीजों के स्थान पर धात्विक वस्तुएं जैसे सोना तथा कागज की मुद्रा, बैक नोट तथा चैक आदि का इस्तेमाल होने लगा है।

## 5.5 आर्थिक विनिमय के आधुनिक रूप

जैसा कि पिछले खंड में बताया गया है, अब बैंकों से जारी होने वाले नोटों तथा चैकों के रूप में कागज की मुद्रा चलन में है। ये मुद्रा–आधारित अर्थव्यवस्था के आधुनिक रूप हैं तथा इन्हें सामान्यतः विनिमय की प्रक्रिया के अंतर्गत भुगतान के प्रतिमान के रूप में स्वीकृति प्राप्त है। बैंक से जारी होने वाले नोट तथा चैक भुगताने की मुद्रा के रूप में वैधानिक रूप से स्वीकार किये जाते हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकी के व्यापक रूप चलन में उसने से बैंक प्रणाली में भारी परिवर्तन आया है। (आइंस्टीन, 2011) इसकी वैधानिक मान्यता के कारण ये मुद्राएँ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी स्वीकृति पा चुकी हैं। फिर भी, यह नहीं कहा जा सकता कि कागज की मुद्रा के आविष्कार से धात्विक धन का अस्तित्व समाप्त हो गया है। कागज की मुद्रा के रूप में धन अर्थात सोना ठोस आधार प्रदान करता है। आवश्यकतानुसार कागज की मुद्रा को धावित्व धन अर्थात सोने में बदला जा सकता है। यही कारण है कि सोना और चांदी की कीमत में भारी उछाल आ गया है। धन के रूप में आई इस संक्राति के बाद तथा कागज की मुद्रा के रूप में मौजूद धन की अपरिवर्तनीय विशेषता के कारण बैंक द्वारा जारी किये गये और सब जगह स्वीकार किये जाते हैं क्योंकि ये नोट वैधानिक निविदा के रूप में स्थायी साख पा चुके हैं। यद्यपि कागज की मुद्रा के कुछ नकारात्मक पक्ष भी हैं, जैसे इन्हें चुराया जा सकता है और बड़ी मात्रा में इनका यातायात नहीं किया जा सकता। इसलिए आधुनिक बैंक प्रणाली ने बड़े स्तर पर विनिमय के माध्यम के रूप में चैक का चलन आरंभ किया है। यद्यपि चैक धन का वहनीय रूप हैं। परन्तु चैक बैंक के नोटों को चलन से नहीं हटा सकते। बैंक से जारी किये जाने वाले नोट तथा चैक साथ–साथ अस्तित्व में हैं तथा आधुनिक दुनिया में धन के व्यापक रूप से स्वीकार किए जाने वाले रूप है। यद्यपि दोनों के बीच एक अंतर हैं। विनिमय के बाद नोट अपनी कीमत नहीं खोते, परंतु लेन–देन/भुगतान के बाद चैक का अस्तित्व समाप्त हो

जाता है। बड़े स्तर के लेन–देन के लिए चैक विनिमय सबसे अधिक सुविधाजनक माध्यम हैं, जबकि छोटे स्तर पर विनिमय के लिए प्रायः नोटों या नकदी का इस्तेमाल किया जाता है। भुगतान की विधि में समकालीन युग में एक बड़ा बदलाव आया है। बैंक नोट तथा चैक के साथ–साथ अब बड़े सौदों में बिलों तथा सेविंग सर्टीफिकेट का ऑनलाइन भुगतान प्रक्रिया में इस्तेमाल होने लगा है।

### मुद्रा का उद्भव

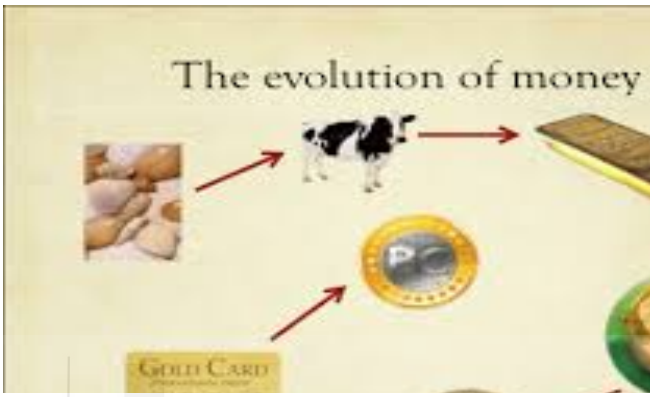


ऑनलाइन लेन–देन एक प्रकार से आर्थिक लेन–देन का डिजीटल रूप है जिसे 'ई–मनी' कहा जाता है। यह डिजीटल विनिमय प्रौद्योगिकी के नवीनतम रूपों जैसे ऑनलाइन बैंकिंग प्रणाली, मोबाइल बैंकिंग, पेटीएम आदि के कारण संभव हो सका है। जबकि कागज की मुद्रा के माध्यम से बड़े से बड़ा लेन–देन किया जा सकता है, जबकि डिजीटल के माध्यम का इस्तेमाल बहुत बड़े लेन–देन किया जा सकता है, जबकि डिजीटल माध्यम का इस्तेमाल बहुत बड़े लेन–देन के लिए नहीं किया जा सकता। ऑनलाइन लेन–देन के लिए नहीं किया जा सकता। ऑनलाइन लेन–देन की सीमाएं है, परन्तु तुरंत भुगतान की यह अच्छी सुविधा है। डिजीटल विनिमय का एक अन्य रूप डिजीटल विनिमय के लिए प्लास्टिक धन का इस्तेमाल भी किया जाता है। क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड तथा अन्य अनेक प्रकार के प्लास्टिक के कार्ड इस उद्देश्य के लिए चलन में हैं।

**बोध प्रश्न 1**

1) धन की अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्लास्टिक धन प्लास्टिक का बना होता है (सत्य/असत्य)।

3) डिजीटल लेन–देन में ..... भुगतान शामिल है।

4) सहमति विनिमय से किये जाने वाले विनिमय लक्षण को ..... (सहयोगी/प्रतिस्पर्धा)

5) क्रेडिट कार्ड/डेबिट कार्ड द्वारा भुगतान ..... धन का एक रूप है।

## 5.6 मुद्रा की भूमिकाएं

उत्पादों तथा सेवाओं के विनिमय अथवा अन्य तरह के लेन–देन के लिए धन का इस्तेमाल जिस प्रकार से किया जाता है, वही धन के कार्य कहलाते हैं। जब तक धन किसी के पास होता है तब उसका मूल्य धन रखने वाले के अधीन रहता है। संबंधित वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमत तय करने में भी धन की भूमिका रहती है, इस प्रकार धन के बदले प्राप्त होने वाली वस्तुओं की बेहतर खरीदारी सुनिश्चित करने में भी धन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। धन का इस्तेमाल किया जाता है। जॉन हिक अपनी 1967 में प्रकाशित लेख श्रृंखला ''क्रिटिकल एसेज इन मोनेटरी थ्यौरी'' में लिखा है – धन की व्याख्या उस रूप में की जाती है जिस रूप में वह काम आता है। अर्थशास्त्री (इंधाम, 2004 तथा मिस्किन व सरलेटीज्, 2011) तथा समाज विज्ञानी (जैसे मुरेर, 2006 तथा केरूथर्स, 2010) ने धन के तीन काम बताये हैं। ये हैं – विनिमय के माध्यम के रूप में, कीमत के रूप में, खाते की इकाई के रूप में। उनके अनुसार धन तथा अन्य संसाधनों में मुख्य अंतर यही है कि धन वस्तुओं या संसाधनों के विनिमय के माध्यम की भूमिका निभाता है।

### 5.6.1 विनिमय के माध्यम

धन की प्रमुख भूमिका उसका विनिमय का माध्यम होना है। विनिमय के माध्यम होने का सामान्यताः अर्थ यह है कि उसके बदले कोई चीज या सेवा प्राप्त की जा सकती है। क्योंकि विनिमय के केंद्र में धन होता है, अतः वस्तुओं या सेवाओं को प्राप्त करने का माध्यम प्रायः धन को ही बनाया जाता है। खरीदारी करने में बैंक से जारी किये गये नोटों का इस्तेमाल किया जाता है या फिर चैक इस्तेमाल किये जाते हैं। यह धारणा कि धन विनिमय का माध्यम है धन की उस कीमत में निहित है जो धन में खरीदारी करने के लिए मौजूद रहती है। लेने–देन को सफल बनाने के लिए विनिमय के ऐसे माध्यम का होना जरूरी है जिसके द्वारा विनिमय किया जा सकता है। प्राचीन समाजों में वस्तुओं से वस्तुओं बदलने का रिवाज था और केवल तब ही विनिमय किया जाता था जब किसी खास चीज की जरूरत महसूस की जाती थी। आधुनिक युग में भुगतान के माध्यम के रूप में धन का इस्तेमाल किया जाता है जिसमें दो स्थितियाँ पहले से ही मौजूद रहती है – ऐसे व्यक्ति का होना जरूरी है जिसे उस चीज की जरूरत है जो किसी अन्य के पास है, तथा उस व्यक्ति का होना जरूरी है जिसके पास वह वस्तु है जिसकी तलाश पहले व्यक्ति को है। पहला व्यक्ति विनिमय के उस रूप में भी मौजूद था तो अतीत काल में हुआ करता था, जिसमें वस्तुओं के बदले वस्तुओं का लेन–देन किया जाता था। परन्तु दूसरे व्यक्ति का होना पारम्परिक तथा आधुनिक दोनों प्रकार के विनिमय में जरूरी है। उपयुक्त व्यक्ति की पहचान करने की प्रक्रिया उन उत्पादों पर आधारित है जो विनिमय के इच्छुक व्यक्तियों के पास मौजूद हैं। जो उनके पास नहीं हैं उनका विनिमय दुहरा संयोग कहा जायेगा। विनिमय का माध्यम दुहरे संयोग को बनाये जाने से माल के उत्पादन जो कि श्रम विभाजन के आधार पर वस्तुओं की निर्भरता को सुनिश्चित करती है। जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है।

### 5.6.2 मूल्य को संचित करना

धन का दूसरा काम मूल्य को संचित करना है। धन खरीदने की शक्ति को संचालित करता है। भविष्य में खरीदारी के लिए संचित करके रखे गये धन की मात्रा खरीदारी की शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है। इसी आशय में लोग जितना धन प्राप्त करते हैं, उसे सारे का सारा खर्च नहीं करते। प्राप्त धन के एक भाग को भविष्य में खरीदारी या अन्य रूपों में इस्तेमाल के लिए बचाकर रखते हैं। उदाहरण के लिए एक मजदूर अपने काम के बदले जितनी पगार पाता है, उसका एक हिस्सा ही खर्च करता हैं और शेष को भविष्य के विनिमय के लिए बचाकर रखता है ताकि उन दिनों उसे संकट का सामना न करना पड़े, जब उसकी आमदनी में कमी आ जाती है। धन में अंतर्निहित मूल्य के कारण धन को खरीदारी की शक्ति के रूप में अर्जित करके रखा जाता है। धन में अंतर्निहित खरीदारी की शक्ति बदलती रहती है। वर्तमान में वह कुछ और होती है भविष्य में कुछ और लेकिन धन का मूल्य सदा बना रहता है। धन की इसी शक्ति के कारण उसे लॉकर में रखा जाता है और आवश्यकता पड़ने पर उसे बाहर निकाला जाता है। अर्जित करके रखा हुआ धन अपनी उपयोगिता को खोता नहीं है। अतीत में जिस तरह खरीदने की शक्ति उसमें मौजूद थी वही शक्ति बाद में भी मौजूद रहती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि धन के संचयन को ही मूल्य बनाये रखने का काम में क्यों लिया जाता है जबकि मूल्य को सुरक्षित रखने की शक्ति तो वस्तुओं को सुरक्षित रखने की क्षमता मौजूद रहती है। परंतु दोनों में अंतर यह है कि धन में तरलता होती है जो वस्तुओं में नहीं होती है। धन और वस्तुएं दोनों का विनिमय किया जा सकता है तथा दोनों को ही संभाल कर सुरक्षित रखा जा सकता है परन्तु दुनिया की समस्त वस्तुओं तथा संसाधनों की तुलना में धन की तरलता बहुत ज्यादा होती है। इसका अर्थ यह है कि धन के मूल्य को आंकने के लिये अथवा खरीदारी करने के लिये धन में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना पड़ता, उसकी कीमत ही काम चलाने के लिये काफी है, लेकिन वस्तुओं अथवा संसाधनों को खरीदारी करने के लिये पहले धन में बदलना पड़ता है। धन या मुद्रा का मूल्य नापने की आवश्यकता नहीं पड़ती उसकी प्रकृति को जानने की जरूरत ही नहीं पड़ती परन्तु वस्तु की प्रकृति और उसके आंकलन के आधार पर ही उसका मूल्य तय किया जाता है। एक बात यह भी है कि वस्तु का मूल्य प्रायः बदलता रहता है। उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति अपना कर्जा चुकाने के लिये अपनी जमीन का इस्तेमाल करना चाहता है तो उसे जमीन के उतने दाम नहीं मिल पायेंगे जितने बाजार में होने चाहिये और उसे अपनी जमीन कम कीमत में बैचनी पड़ेगी। इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि बिकाऊ वस्तु की कीमत प्रायः कम हो जाती है, इसलिये इस तरह की स्थिति में जमीन को मूल्य संग्रह के मामले में अधिक उपयोगी नहीं माना जा सकता जबकि धन में भरपूर तरलता होती है और इसीलिए वह मूल्य को धारण करने की बेहतर क्षमा रखता है। क्योंकि धन या मुद्रा की कीमत निश्चित होती है और वह समय के साथ बदलती नहीं है।

**गतिविधि 1**

सब्जी मंडी में जाइये और फलों तथा सब्जियों के बाजार का कुछ दिनों तक निरीक्षण कीजिये। देखिये फल और सब्जियों की कीमत कैसे लगाई जाती है। सब्जी और फल बेचने वालों से इस बात को जानने की कोशिश कीजिये कि इनकी कीमत घटती बढ़ती क्यों रहती है।

फलों और सब्जियों की कीमत पर तथा उनके बेचे जाने के तरीके पर एक आलेख तैयार कीजिये अपने अध्ययन केन्द्र पर जाकर अन्य साथियों के साथ इस आलेख पर चर्चा कीजिये।

### 5.6.3 खाते की इकाई के रूप में

धन या मुद्रा का तीसरा काम खाते की इकाई की भूमिका निभाना है। इसके माध्यम से कीमत का निर्धारण किया जाता है। वस्तु–विनिमय वाली अर्थव्यवस्था में वस्तुओं की कीमत जानने की आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि वहां वस्तुओं के बदले वस्तुं ली और दी जाती है। धन या मुद्रा खाते की एक इकाई के रूप में काम करता है तथा विनिमय के समय वस्तुओं अथवा सेवाओं के मूल्य निर्धारण में सहयोगी होता है। यदि हम एक किलोग्राम चिकिन और एक किलोग्राम मटन की कीमत तय करना चाहते है तो (जैसे चिकिन की कीमत 150 रूपये प्रति किलो और मटन की कीमत 450 रूपये प्रति किलो) होगे पर हम यह कहेंगे कि चिकिन की तुलना में मटन तीन गुना मंहगा है। धन तथा वस्तुओं की सापेक्ष कीमत में इस प्रकार आसानी से तुलना की जा सकती है। वस्तुओं की कीमतें मुद्रा की कीमतों द्वारा ही तय की जाती हैं। धन खाते की इकाई के रूप में विभिन्न वस्तुओं की कीमतों की तुलना करने का काम करता है, इसका अर्थ यह हुआ कि कीमत का आप विनिमय के माध्यम पर निर्भर करता है।

वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतों को नापने की प्रक्रिया को सरलतापूर्वक एक उदाहरण से समझा जा सकता है। यदि हम विभिन्न देशों जैसे – अमेरिका, ब्रिटेन, भारत, यूरोप आदि देशों की मुद्राओं को लें तो हम पायेंगे कि यह सभी देश विनिमय के लिये अलग–अलग मुद्राओं का इस्तेमाल करते हैं, और उनकी मुद्रायें उनके लिये कीमत नापने की मौलिक इकाईयां हैं। इन देशाों में कोई भी चीज का किसी भी कीमत पर बेचा जाना उस देश की मुद्रा के रूप में उसकी कीमत का निर्धारण करता है। विनिमय बाजार में कम से कम कीमत पर किसी भी चीज को खरीदने के लिये हम तब उसे कम से कीमत पर प्राप्त कर सकते हैं जबकि हम निश्चित मुद्रा का इस्तेमाल करें। विभिन्न देशों में वस्तुओं की कीमतें वहीं की मुद्राओं के आधार पर अलग अलग होती हैं। वह इकाई जिसमें किसी देश में कीमत वस्तु की कीमत लगाई जाती है वह उसे देश के खाते की इकाई मानी जाती है। जैसे भारत में खाते की इकाई रूपयो को माना जाता है, अमेरिका में डॉलर को तथा यूरोपीय देशों में यूरो को।

## 5.7 मुद्रा एवं वैधता

ऊपर के खण्ड में हमने यह स्पष्ट कर दिया है कि मुद्रा के अनेक रूप होते है, जैसे वस्तु मुद्रा, कागज की मुद्रा, प्लास्टिक की मुद्रा, डिजीटल मुद्रा या ई–मुद्रा। सभी प्रकार की मुद्राएं विनिमय के माध्यम के रूप में काम करती हैं। परन्तु क्या ई–मुद्रा को मुद्रा के रूप में स्वीकारा जा सकता है? क्योंकि यह ऊपर वर्णित तीनों प्रकार की भूमिकाएं निभाती है। एक बात ओर स्पष्ट है कि सभी प्रकार की मुद्राएं विनिमय के माध्यम के रूप में इस्तेमाल की जा सकती हैं, परन्तु विनिमय के सभी माध्यम धन या मुद्रा का निर्माण नहीं करते। यह तर्क उस आधार की व्याख्या करता है कि जो धन का निर्माण करता है। यहाँ एक ऐसी चीज उपस्थित होती है जो धन की व्याख्या करने वाले आर्थिक पक्षों से अलग होती है और यह वैधानिकता या किसी चीज की मामूली मान्यता जो वैधानिक मान्यता प्राप्त की वैचारिक पक्ष धन का निर्माण

विनिमय के माध्यम के स्थान पर करता है। इसलिए, ई–मुद्रा को विनिमय के माध्यम का दरजा प्राप्त होता है, जबकि इसे मुद्रा या धन के रूप में स्वीकारा नहीं जाता। क्योंकि भारत में ई–मुद्रा को कानूनी मान्यता प्राप्त नहीं है। ई–मुद्रा द्वारा लेन–देन किया जाता है उसे दो पक्षों के बीच मुख्यतः आपसी समझौते के आधार पर किया जाता है।

ऊपर उल्लिखित दलील को उस कीमत द्वारा व्याख्यायित किया जा सकता है जिसे सरकार ने धन की पदार्थ के रूप में निर्मित के बिना भी मान्यता प्रदान की है। सरकार मुद्रा के रूप में धन जारी करती है और उसे कोई कीमत प्रदान करती है तथा उसे लेन–देन के लिए इस्तेमाल करने हेतु कानूनी मान्यता प्रदान कर देती है।

सरकार द्वारा जारी की गई मुद्रा को वैधानिक अनुमोदन प्राप्त होता है, अतः अर्थशास्त्री इसे 'वैधानिक संविदा धन' की संज्ञा देते हैं, (फुलर, 1989) और इसी से यह लोगों के बीच विनिमय के लिए माध्यम के रूप में स्वीकारे जाने के लिए साख प्राप्त कर लेती है। वैधानिक सांविदिक धन/मुद्रा ही एकमात्र वह माध्यम है जिसे वित्तीय संस्थान मान्यता प्रदान करते हैं तथा अपने उपभोक्ताओं के साथ उसे चलन में लाते हैं। यद्यपि ऋण के रूप में लौटाने की मुद्रा की कीमत की एक सीमा होती है। उदाहरण के लिए भारत में 20वीं शताब्दी के अंतिम दिनों में कम कीमत वाले सिक्कों – 25 पैसे, या 50 पैसे के सिक्को की कीमत की सीमा 25 रूपये तक सीमित कर दी गई। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने 25 पैसे अथवा उससे कम कीमत वाले सिक्को को चलन से बाहर करने की घोषणा कर दी, और 30 जून 2011 से (चिन्नामाई, 2013) से यह सिक्के पूरी तरह चलन से बाहर हो गये। इसलिए विनिमय बाजार में एक सीमा से निर्धारित अधिक निचली कीमत वाली मुद्रा को विनिमय के लिए मुद्रा के रूप में लोगों द्वारा स्वीकार करने से इन्कार कर दिया जाता है। ऐसी स्थिति में निचले मूल्य वर्ग के सिक्के अगर सीमा से ज्यादा निर्धारित है तो उन्हें वैधानिक मुद्रा माना जायेगा।

**बोध प्रश्न 2**

1) मुद्रा के तीन मौलिक कार्यों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमत आधुनिक समाजों में केवल ई–मुद्रा द्वारा निर्धारित की जाती है। ..... (सत्य/असत्य)।

3) ई–मुद्रा क्या है? (..... मुद्रा/धन)।

4) वैधानिक संविदा मुद्रा क्या है?

.....

.....

.....

## 5.8 सारांश

इस इकाई में हमने धन/मुद्रा विनिमय तथा विनिमय का तरीका जो हमारे समाजों में अतीत काल में मौजूद था तथा धन या मुद्रा के वे रूप जो विनिमय प्रक्रिया में इस्तेमाल किये जाते थे। इस इकाई में मुद्रा/धन और विनिमय के इतिहास का भी संक्षेप में विवरण दिया गया। इससे पता लगता है विनिमय के आयाम लगातार बदलते रहे हैं और वस्तु विनिमय से विनिमय की यात्रा चलकर बैंक द्वारा जारी किये गये नोटों तक आ पहुंची जो बीते समय में ही आग गये थे और आज भी मौजूद हैं। इसी इकाई में यह भी स्पष्ट किया गया है कि कागज की मुद्रा किस प्रकार चलन में आई। साथ ही आधुनिक युग में विनिमय के अन्य तरीकों पर भी प्रकाश डाला गया है। इसी इकाई में हमने मुद्रा के विभिन्न कार्यों का वर्णन भी किया गया। मुद्रा के विनिमय के माध्यम के रूप में भी मुद्रा की भूमिकाओं के बारे में बताया गया। मुद्रा की कीमत तथा मुद्रा की खाते के रूप में भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया। मुद्रा के कानूनी पक्षों के बारे बताया गया तथा यह भी बताया गया कि मुद्रा किस प्रकार वैधानिकता प्राप्त करती है।

## 5.9 संदर्भ


- ''द मीनिंग्स ऑफ मनीः ए सोश्योलॉजिकल प्रोस्पैक्टिव,'' थियोरेटिकल इनक्वारीज़ इन लॉ वॉल्यूम 2, नं, 51, पीपी–51–74।
- सी. आइंसटीन (2011). ''सेक्रेड इकॉनोमिक्सः मनी, गिफ्ट, एण्ड सोसाइटी इन द एज ऑफ ट्राजीशन – नार्थ एटलांटिक बुक्स।
- जी. इंगहम (2004). ''द नेचर ऑफ मनी'' – केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रैस : यू. के.।
- बी मॉनर (2006). ''द एंथ्रोपोलॉजी ऑफ मनी – एन्युअल रिव्यू ऑफ एंथ्रोपोलॉजी वोल्यूम 35 पीपी 15–36।
- विवियाना, जेलीजर, (1994). ''द सोशल मीनिंग ऑफ मनी'' न्यूयार्क : बेसिक बुक्स।
- ''एक्चेंज एण्ड पॉवर इन सोशल लाइफ'' – विली – पी एम ब्लाऊ।
- बी. जी. केरूथर्स (2010). ''द मीनिंग ऑफ मनी : ए सोश्योलॉजिक पर्स पेक्टिव'' – थियोरेटिकल इंक्वारीज इन लॉ, वोल्यूम 11 नं. 51, पी.पी. 51–74।
- ए चिन्नामई (2013). ए स्टली ऑफ करेंसी एण्ड कॉइनेज सर्कुलेशन इन इंडिया।
- सी. जे. फुलर (1989). ''मिस्कंसीविंग द ग्रेन हीप : ए क्रिटिक ऑफ द कंसैप्ट ऑफ द इंडियन जजमनी सिस्टम – इन जोनाथन पेरी एण्ड मॉरिस ब्लॉच (एडस)।
- मनी एण्ड द मोरॉल्टी ऑफ एक्सचेंज (पीपी 33–63) केंब्रिज यूनीवर्सिटी प्रैस।
- जे. आर. हिक्स, (1967). ''क्रिटिकल एसेज इन मोनेट्री थियौरी'' – ऑक्सफोर्ड : क्लेरेंडन प्रैस।

- ए सर्लेटीज एण्ड एफ मिश्किन (2011). ''द इकोनॉमिक्स ऑफ मनी, बैंकिंग एण्ड फाइनेंसियल मार्केट्स'' – फोर्थ कनाडियन एडीशन, कनाडा : पीयर्सन।


## 5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) मुद्रा विनिमय का माध्यम है जिसे उत्पादों व सेवाओं की प्राप्ति के लिए इस्तेमाल में लाया जाता है।
2) गलत
3) ऑनलाइन
4) प्रतिस्पर्धा
5) प्लास्टिक

**बोध प्रश्न 2**

1) अ) विनिमय का माध्यम
   ब) कीमत का केंद्र
   स) खाते की इकाई
2) गलत
3) इलैक्ट्रोनिक
4) वैधानिक संविदा मुद्रा वह मुद्रा है जिसे सरकार की कानून मान्यता प्राप्त होती है।